कुष्ठरोग की पहचान और उसके मुद्दित

कुष्ठरोग? घबड़ाइए मत! तुरंत जाँच कराएं.....

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, ग्रामीण अस्पताल, नगरपालिका / महानगरपालिका अस्पताल और मेडिकल कॉलेजों में कुष्ठरोग की मुफ्त में जाँच और इलाज (एम.डी.टी.) किया जाता है।

LEAP कुष्ठरोग दूरीकरण की कार्यक्रम

तैलीय, लाल रंग का, सूजा हुआ चेहरा / कान की बालियों का मोटापन

शरीर पर गाँठें और तैलीय, लाल रंग की सूजी हुई त्वचा

कुष्ठरोग अनुवांशिक नहीं है। कुष्ठरोग किसी को भी हो सकता है।

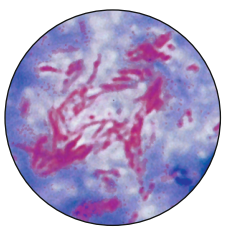

सूक्ष्मदर्शक यंत्र में कुष्ठरोग के जीवाणु लाल तीलियों जैसे दिखाई देते हैं।

कुष्ठरोग के जीवाणु
(Mycobacterium Leprae)
इनकी खोज 1873 में डॉ. हॅन्सन ने की थी।

- कुष्ठरोग मायको बॅक्टीरियम लेप्री नामक कुष्ठ जीवाणुओं से होनेवाली बीमारी है।
- आमतौर पर ९८ फीसदी लोगों में कुष्ठरोग से लड़ने की उत्तम प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक शक्ति होती है, इसलिए उन्हे कुष्ठरोग नहीं होता है।
- कुष्ठरोग के जीवाणुओं का शरीर में प्रवेश हो जाने के बाद अगर कुष्ठरोग प्रतिरोधक शक्ति कम हो तो ३ से ५ साल में शरीर पर कहीं भी कुष्ठरोग के लक्षण (चिन्ह) दिखाई दे सकते हैं।
- सौ नए कुष्ठरोगियों में सिर्फ १० से १५ रोगी ही संक्रामक (बीमारी फैलानेवाले) होते हैं।

जॉच लीजिए तीन बातें, कुष्ठ के लक्षण...1 2 3

1

साधारण से दिखाई देनेवाले व्यक्ति की तैलीय, चिकनी, सूजनभरी और लाल रंग जैसी त्वचा कुष्ठरोग का लक्षण हो सकती है।

- त्वचा तैलीय, लाल, मोटी / सूजी हुई दिखाई देने के अलावा कान की बालियों का मोटा होना, सूजा हुआ चेहरा, भौंहों के बाल कम होने लगना (झड़ना), शरीर पर गांठों का निकलना भी कुष्ठरोग के लक्षण हो सकते हैं।
- **सभी संक्रामक रोगों में** कुष्ठरोग **सबसे कम** संक्रामक रोग है।
- कुष्ठपीड़ित व्यक्ति की शारीरिक विकृति और विकलांगता का कुष्ठरोग के प्रसार से कोई भी संबंध नहीं है।

एमडीटी इलाज न हुए संक्रामक कुष्ठरोगी ही समाज में रोग फैलाते हैं।

2

कुष्ठरोग से पीड़ित आदमी की बीमारी संक्रामक है या नहीं इसका पता जीवाणु की जाँच के बाद ही चलता है। विकृति या कुरुपता देखकर नहीं।

सुन्न, संवेदनाहीन हाथ-पैर / शरीर के अंगों की उचित देखभाल रखने पर शारीरिक विकृति, कुरुपता और विकलांगता से बचा जा सकता है।

2

कुष्ठरोग के कारण चेतनातंतुओं (तंत्रिका) में खराबी आ जाने से शारीरिक विकृति और विकलांगता आ सकती है।

- सौ नये कुष्ठरोगियों में सिर्फ १ से ३ रोगियों को शारीरिक विकृति और विकलांगता हो सकती है।
- हाथ-पैर की संवेदी तंत्रिका खराब हो जाने पर हाथ-पैर में चींटियां आना, झनझनाहट होना, हाथ-पैर में सुन्नपन और त्वचा की शुष्कता (सूखापन) जैसे लक्षण पाए जाते हैं। मांसपेशियां कमजोर होकर ठीक से काम नहीं कर पाती हैं, परिणामस्वरुप हाथ-पैर की उंगलियां टेढ़ी हो जाती हैं।
- शरीर की संवेदी तंत्रिका खराब हो जाने पर संबंधित हिस्से या अंगों पर असर पड़ता है। जैसे कि हाथ-पैर में बार-बार जख्म होना और आँख की पलकों को बंद न कर पाना, उंगलियाँ टेढ़ी होना, हाथ या पैर को लकवा हो जाना।

शारीरिक विकृति और कुरुपता ही कुष्ठरोग के बारे में भय और सामाजिक घृणा का मूल कारण है। जल्द निदान और नियमित इलाज से कुष्ठरोग के कारण होनेवाली विकृतियों से बचा जा सकता है। इसी प्रकार कुष्ठरोग का निर्मूलन बहुत आसानी से हो सकता है। सिर्फ आपका साथ और सहयोग चाहिए।

3

शरीर पर लाल रंग का उभरा हुआ चकत्ता

3

कई दिनों का दाग या चकत्ता, कुष्ठरोग का हो सकता है।

- कुष्ठरोग की शुरुआत एक या अनेक दागों से हो सकती है।
- शरीर की त्वचा के रंग से फीका या लाल रंग का सपाट या उभरा हुआ दाग कुष्ठरोग का हो सकता है।
- शरीर के कई हिस्सों में और ज्यादा संख्या में दाग या चकत्ते भी कुष्ठरोग के लक्षण हो सकते हैं।
- आकार या संख्या में धीरे-धीरे बढ़नेवाले, फैलनेवाले और कई दिन के दाग / चकत्तों को कतई अनदेखा न करें।

कुष्ठरोग के जल्द निदान और नियमित उपचार से शारीरिक विकृति और विकलांगता से बचा जा सकता है।

पीठ पर उभरा हुआ लाल रंग का चकत्ता

बदन पर सपाट, फीके रंग के चकत्ते

बहु औषधोपचार (एम.डी.टी.)

छः से बारह माह औषधोपचार

बच्चों के लिए

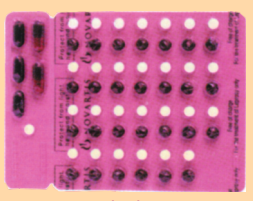

वयस्कों के लिए

समूह विभाजन

एम.बी. (मल्टी बेसिलरी):

- ६ अथवा अधिक दाग / चकत्ते
- मुख्य चेतनातंतुओं (तंत्रिका) में खराबी।
- त्वचा विलेपन जांच में कुष्ठरोग के जीवाणुओं का (पॉझिटीव्ह) पाया जाना।

पी.बी. (पॉसी बेसिलरी):

- १ से ५ दाग/चकत्ते

औषधोपचार के पहले

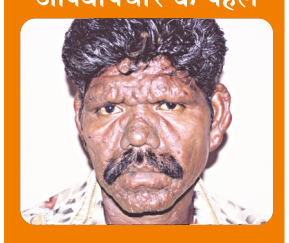

औषधोपचार के बाद

नियमित औषधोपचार से कुष्ठरोग पूरी तरह से ठीक हो जाता है।

25/06/2025 -2,000

ALERT-INDIA लोकशिक्षा के लिए प्रकाशित : ॲलर्ट-इंडिया, बी-९, मीरा मॅन्शन, सायन (प.), मुंबई - ४०० ०२२. Tel: 022-24033081 / 2 | info@alertindia.org | www.alertindia.org